

7

SPS  
891.2 G 87 B



6346











# भारती भूषणा

جانی بوشن

श्री गिरिधर दास कवि राज कृत

जिसमें

सम्पूर्ण अलङ्कार के लक्षण उदाहरण सहित अति

सरलता पूर्वक वर्णित हैं

पहिली बार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

अक्टूबर सन् १९८० ई०



# विशेष

कृत महीने अस्यात का कबर सन् १८८० ई. पर्व्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वे इस क्रि. हरेस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत कम है। यत से घटाकर लिखा है परन्तु यों पारियों के लिये और भी सली हैं। गीतिस को व्योपा रकी वृक्षा हो वह छापि रवाने के सुहृत्त निस अथवा सगलिक के नाम खत सेज- कर कीमत का निर्णय करले ॥

| नाम किताब                | नाम किताब           | नाम किताब            | नाम किताब           |
|--------------------------|---------------------|----------------------|---------------------|
| भावा इतिहास              | ई भीष्म पर्व        | बाल काण्ड            | जन्म काथे           |
| महा भारत                 | १ शोरा पर्व         | अयोध्या काण्ड        | छन्दो र्हाव पिंगल   |
| १ हिस्सा में आदि पर्व    | २ कारा पर्व         | ३ आर राय काण्ड       | कविकुल कल्पतरु      |
| सभा पर्व वन पर्व         | ४ शल्य पर्व गदा     | ४ किष्किन्धा कांड    | रम राज              |
| २ हिस्सा में विराट पर्व  | सौप्तिक पर्व मययो   | ५ सुन्दर काण्ड       | सत्सर्द सरीक विहारी |
| उद्योग पर्व भीष्म पर्व   | धिक व विशेष कर्व    | ६ लंका काण्ड         | सत्सर्द             |
| शोरा पर्व                | हृदी पर्व           | ७ उत्तर काण्ड        | सभा विलास           |
| ३ हिस्सा में कारा पर्व   | १० शान्ति पर्व राज  | रमायणा शब्दार्थ कोश  | गुलसी शब्दार्थ प्र  |
| शल्य पर्व गदा पर्व       | धर्म व आपद धर्म     | रमायणा काव्येतिहास   | भजनावली             |
| सौप्तिक पर्व योषिक       | व मोक्ष धर्म व दान  | रमायणा गान सहीपि     | प्रेम रत्न          |
| पर्व विशेष कर्व हृदी     | धर्म                | रमायणा गीतावली       | युगल विलास          |
| पर्व शान्ति पर्व राजध    | ११ आश्वमेध आश्र     | रमायणा गीतावली स     | चित्र चन्द्रिका     |
| र्म मोक्ष धर्म           | स वासिक सुशलय       | विनय पत्रिका बावूमी  | बारह मासा बलदेव     |
| ४ हिस्सा में शान्ति पर्व | र्व महा प्रस्थान स  | विनय पत्रिका बावूमी  | सनी हर लहरी         |
| दान धर्म, अश्वमेध        | गा रोहसा            | वेदान्त              | संगाल हरी           |
| आश्रम वासिक पर्व         | १२ हरिवंश पर्व      | योग वासिष्ठ          | जगद विनोद           |
| मुशल पर्व, महा प्र       | रमायणा राम विलास    | प्रबोध चंद्रोदय नाटक | राग                 |
| स्थानुल गा रोहसा         | रमायणा तुलसी क      | काव्य                | राग प्रकाश          |
| पर्व हरिवंश पर्व         | रमायणा मय मावस      | सूर सागर             | लावनी               |
| महा भारत पर्व अले        | दीपिका कोश आदि      | रुक्म सागर           | शृंगार वनीसी        |
| इहा भी है                | मथा मयत सवीर        | विश्राम सागर         | किस्मद वंशैरह       |
| १ आदि पर्व               | तथा जिल्द बन्दी     | प्रेम सागर           | जानार्थ नौ संयहावली |
| २ सभा पर्व               | तथा मोटे अक्षरों की | व्रज विलास           | वहसागर              |
| ३ वन पर्व                | मयत सवीर            | व्रज विलास छोटा      | शिव सिंह सरोज       |
| ४ विराट पर्व             | तथा मयक्षेपक        | रुक्म प्रिया         | भक्त माल            |
| ५ उद्योग पर्व            | रमायणा रातों कांड   | विजय मुक्तावली       | रमा भिषेक नाटक      |



श्रीगणेशाय नमः

# अथ भारतीभूषण

निरव्यंते  
दोहा

॥ श्रीवल्लभ आचार्य के भजत भजत सब पाप ॥ श्रीवल्लभ  
भ करुणा करत हरत सकल संताप १ विधि भवतरनी हम  
सही जम गरु करुनाहिं ॥ विधि भवतरनी नमन नित हरि  
पद मम उर माहिं २ मोहन मन मानी सदा बानी को करि  
ध्यान ॥ अलंकार बरनन करत गिरिधर दास सुजान ३  
सुंदर बरनन गन रचित भारतीभूषण यह ॥ पढ़हु गुनहु  
सीखहु सुनहु सत कवि सहित सनेहु ४ अथोपमाल  
द्वय ॥ सो उपमा जहं बरनिये उपमेय रु उपमान ॥ समता  
ई शोभित सदा हमि कवि कहहिं सुजान ५ उदाहरण य  
था ॥ आनन पंचानन तिलक पंचानन करि मोह ॥ खरी  
रमासी राधिका भरी मोद संदोह ६ उपमानादि केल  
साण ॥ जाकी समता दीजिय तिहि कहिय उपमान ७  
जाको सम करि बरनिय सो उपमेय न आन ८ उपमेय ज  
हु उपमान गत जो कुछ धरम लखाय ॥ सो सा ॥ जे जग सु  
हमि वरनहिं कबि राय ९ समता बोधक शानति सीविन  
कनाम ॥ बरने गिरिधर दास हमि लखति सीध गति तीर्थ



कंवुकमल अरुविंव फल सुक सुवरन की सीप ॥ इनहिं  
 स्पादि उपमान हैं समुद्र कविकुल दीप ॥ १० ॥ कंठ औ  
 रित् स्फल का बली अधार नासिका घौन ॥ इनहिं स्पादि उ  
 पमेय हैं वरनहिं वा बुधि भौन ॥ ११ ॥ सुंदरता सु कुमारता  
 स्सामलता सुललाम ॥ एसाधारन धर्म हैं मनहरता रस  
 धाम ॥ १२ ॥ लौं से से सी सीं सरिस सम समान इव चल ॥  
 ये से ये से एसकल उपमा वाचक मूल ॥ १३ ॥ निमित्ति  
 मि जै सोइ ते सोइ यथा तथा औं लोहिं ॥ सऊ उपमा वा  
 चक हि दोय मिले ते होहिं ॥ १४ ॥ अथ पूर्णोपमा ॥ उप  
 मान रु उपमेय नहं उपमा वाचक होइ ॥ सह साधारन ध  
 र्म के पूरन उपमा सोइ ॥ १५ ॥ उदाहरन ॥ सुख सुख करनि  
 सिका सरिस सफरी से चलनैन ॥ कीनलं कहरि लंक सी  
 बाढी ये ना ये न ॥ १६ ॥ अथ लुप्तोपमा ॥ उपमानादि क  
 जे कहें तिन चारिहुं प्रकारि ॥ इक विन है विन तीन विन  
 लुप्तोपमा विचारि ॥ १७ ॥ वाचक लुप्ता प्रथम विन उपमा  
 वाचक होइ ॥ द्वितीय धर्म लुप्ता कहिय धर्म रहित है सो  
 इ ॥ १८ ॥ तीजी है वाचक धर्म लुप्ता सुकवि सुजान ॥ विन  
 वाचक उपमेय के लुप्ता चौथी जान ॥ १९ ॥ पंचद है उपमान

विन विन वाचक उपमान ॥ छठीं धर्म उपमान विन सत्  
 १ स्पादि पर्व ॥ २० ॥ उपमान रु वाचक धर्म लुप्ता अठई जा  
 २ सभा पर्व ॥ २१ ॥ पांति लुप्तोपमा कवि जन कहहिं वखान ॥ २२  
 ३ वन पर्व ॥ २३ ॥ मराहरण ॥ सुख पूरन ससि सोहनो अमल  
 ४ विराट पर्व ॥ २४ ॥ तथा ॥ कनक वेलि कल कामिनी मारवन ।  
 ५ उद्योग पर्व ॥ २५ ॥ रामा जग



मधुरवेना ॥२२॥ धर्मलुप्तोदाहरण ॥ बिज्जुलतासी नागरीस  
 जल जलद से श्याम ॥ खो कुज में छवि भरे दोऊ अति अ  
 भिराम ॥२३॥ वाचक धर्मलुप्तोदाहरण ॥ वेन सुधा दृगमे  
 न सर सैन सैन के सैन ॥ बद न रैन पति लख दु हरि रैन चै  
 न चर दैन ॥२४॥ वाचकोपमेयलुप्तोदाहरण ॥ अरा उद  
 य होतो भयो छवि धर पूरन चंद ॥ हों बलि चलि अवलो  
 किये मन मथ करन अनंद ॥२५॥ उपमानलुप्तोदाहरण  
 ॥ सुंदर कंठ कपोल सो के हरि सी करि खीन ॥ जे हरि भ्रम  
 कांचे खरी हे हरि कुंज गलीन ॥२६॥ वाचकोपमानलुप्तो  
 पमा ॥ भवन दीप कामिनि दिपति सरप सांस गुर सेति ॥  
 कौन हेतु हरि मौन वह बूझेहुं उत्तर देति ॥२७॥ धर्मोप  
 मानलुप्तोदाहरण ॥ घन समरन गरजत फिरें कौं काल  
 सी मारि ॥ सागर सी गंभीरता समर धीर त्रिपुरारि ॥२८॥  
 उपमान वाचक धर्मलुप्तोदाहरण ॥ मृग नेनी गज गामि  
 नी पिक चैनी सु कुमारि ॥ के हरि करि वारी खरी नारी ल  
 खो मुरारि ॥२९॥ अथ मालोपमा ॥ जहं एकहि उपमेय के  
 वरने बहु उपमान ॥ ताहि कहहिं मालोपमा कवि सु जान  
 मतिमान ॥३०॥ उदाहरण ॥ मृग से मन मथ बान से पीन  
 मीन से स्वच्छ ॥ कंजन से खंजनन से मन रंजन तो अछ  
 ॥३१॥ अथ रसनोपमालक्षणा ॥ कथित प्रथम उपमेय ज  
 हं होत जात उपमान ॥ ताहि कहहिं रसनोपमा जे जग सु  
 कवि मधान ॥३२॥ उदाहरण ॥ मति सीनति नति सीविन  
 ति विनती सीरति बाहु ॥ रति सीगति गति सी भगति तोये



पवन कुमार ॥३३॥ अनचय लक्षण ॥ एकहि में उपमे-  
 यता उपमानता जु होइ ॥ दूजे सों समतानहीं यहै अन-  
 नै सोइ ॥३४॥ उदाहरण ॥ तुव कीरती सी स्वच्छ तर तुव  
 कीरति है श्याम ॥ सुर सरिता सी सुरसरी शोभा भरी सुदा-  
 म ॥३५॥ उपमेयोपमालक्षण ॥ है ही जहं परसपर उपमे-  
 यरु उपमान ॥ सो है उपमेयोपमा तीजे सो समतान ॥३६॥  
 उदाहरण ॥ अमल कमल से नैन हैं कमल नैन से स्वच्छ  
 ॥ रुचिर काम से श्याम हैं हरि समकाम प्रतच्छ ॥३७॥ अ-  
 थ मतीपलक्षण ॥ उपमेयहि उपमान ज व कीजे गिरिध-  
 रदास ॥ ताकौ पांच प्रतीप में प्रथम जानिये खास ॥३८॥  
 उदाहरण ॥ तो ऐसी नित्य काम की तो मुख सो एकेस ॥  
 नव पल्लव तब अधर से कवु कंठ समवेस ॥३९॥ द्वितीय  
 प्रतीपलक्षण ॥ जहं प्रतीप उपमान को गर्व हरे उपमेय  
 ॥ दूजो कहहिं प्रतीप तेहि जिनकी बुद्धि अमेय ॥४०॥ उ-  
 दाहरण ॥ कहा करति निजरूप को गरब गहे अपिवेक ॥  
 रमा उमा सचिसारदा तो सी तीय अनेक ॥४१॥ तृतीयम-  
 ल ॥ अन आदर उपमेय सों जब पावे उपमान ॥ तीजो  
 कहहिं प्रतीप तेहि कवि अवनीप सुजान ॥४२॥ उदा-  
 हरण ॥ नीच पने को कौं करत तूं उर बीच गुमान ॥ अंत  
 जते से अधिक जगह रे देषी पहिचान ॥४३॥ चतुर्थम-  
 ल ॥ समता लायक होय नहि नब जाहि उपमान ॥ गि-  
 रिधरदास प्रतीप सो है चतुर्थ मतिमान ॥४४॥ उदाहरण  
 तो मुख ऐ सो पंकसुत अरु संकय हवाल ॥ वर नहि



दृष्ट्या असंक कवि बुद्धि रंज विख्यात ॥ ४५ ॥ पंचमप तीप  
 लक्षणा ॥ व्यर्थ होइ उपमान जब वर उपमेय समीप ॥ गि-  
 रिधरदास बखानिये पंचमताहि प्रतीप ॥ ४६ ॥ उदाहर-  
 णा ॥ देखि रूपवत कामिनी कहा उख शीतारि ॥ कहामैन  
 कामैन तिय कमलाशैल कुमारि ॥ ४७ ॥ द्विविध रूपक-  
 लक्षणा ॥ विषद्विषयहि बरनिये करि अभेदत द्रूप ॥  
 अधिक न्यून सम करि सोद्वेष्ट विधि रूपक रूप ॥ ४८ ॥ अधि-  
 कोक्ति अभेद रूपक उ० ॥ घनगजचढ़ि आकाश मग चले  
 इंद्र अरि जोइ ॥ सुधा अचत शशि कुंजसि मोतिन जगम-  
 ग होइ ॥ ४९ ॥ न्यूनोक्ति रूपक उदा० ॥ कुसुम धनुष विनु कु-  
 सुम धनु देवो कुंज गलीन ॥ चली जात जग अपल यह  
 कमला कमल विहीन ॥ ५० ॥ समोक्ति अभेद रूपक उदा०  
 नुअपानन ससि द्रवहरन सुधा धरन छवि खानि ॥  
 राजनी रंजन एसिक प्रियतम हर आनंद दानि ॥ ५१ ॥ अ-  
 धिकोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥ जस धुज वाधुज तें अधिक  
 तीन लोक फहरात ॥ धर्म मित्र वड मित्र सौ भारत जियत  
 संग जात ॥ ५२ ॥ न्यूनोक्ति तद्रूप रूपक उदा० ॥ अपर धने-  
 श जनेश यह नहिं पुष्पक आसीन ॥ दुतिय गणेश सुवेश  
 शुचि मोहत मुंड विहीन ॥ ५३ ॥ समोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥  
 यह पालत संसार कों घालत पर को पच्छ ॥ अपर मनो-  
 हर रूप धर अंबुज अच्छ प्रतच्छ ॥ ५४ ॥ परिणाम ल० ॥  
 वरन नीय उपमान हैं जवें को कछु काम ॥ गिरि धरदास  
 बखानि सतासु नाम परिनाम ॥ ५५ ॥ उदाहरण ० ॥ पद



पंकज तें चलत कर कर पंकज लै कुंज ॥ मुख पंकज तें क  
 हत हरि वचन रचन सुदमंज ॥ चलोख सखा ॥ ५० ॥ एकहि  
 बहुबहु विधिलखेंद कहि वरनि बहु गीति उल्लेख लंकार  
 उभय कवि वरनहिं करि प्रीति ॥ ५१ ॥ भयम उल्लेख ॥  
 तियन काम जाहवन हित नंद सुवन नव अंग ॥ खरकी  
 कंस जन मुनिन हरि मोहन मयिसे रंग ॥ ५२ ॥ द्वितीय उ-  
 ल्लेख उदा ॥ तेज तरनि सुद दानि शशि शत्रुन कास सुस-  
 म ॥ व्रजनारिन कों काम से अहौ सदा घन श्याम ॥ ५३ ॥  
 सुमिरन भ्रम संदेह ल ॥ सुमिरन भ्रम संदेह स अलंका-  
 र हैं तीन ॥ लक्षण लक्षित नाम में वरनहिं सुकवि म-  
 वीन ॥ ६० ॥ सुमिरन उ ॥ सुनि कों किल धुनि वचन की  
 आवति है सुधि मोहि ॥ लखि शशि मुख की होति सुधि  
 तन सुधि घन कों जोहि ॥ ६१ ॥ भ्रम उदाहरण ॥ जानि श्या-  
 म घन घन तुहें नाचि उठे वन मौर ॥ हेम मलाका मानि  
 तोहि चोर फिरै सब ओर ॥ ६२ ॥ संदेह उदाहरण ॥ रमादि  
 बाधा कै गिरि गिरिजा कै रति जानि ॥ श्याम काम धौं क-  
 लपत नारायण सुद दानि ॥ ६३ ॥ सुद्धा पद्धति लक्षण ॥  
 धर्म दुरावे औरही करि आरोप सुजान ॥ सुद्धा पद्धति क-  
 हहि तेहि अपलंकार मति मान ॥ ६४ ॥ उदा ॥ पहिरे श्या-  
 मन पीत पट घन में विजु विलास ॥ सिर सारी नहिं ता-  
 स की दंदु कला परकास ॥ ६५ ॥ हेत्व पद्धति ल ॥ सोइ  
 सुद्धा पद्धति विषे उक्ति युक्ति जुतय व ॥ गिरि धर दासा  
 वरानि रहेतु अप न्हति तव ॥ ६६ ॥ उदा ॥ तियन नि सा



घन वन जैसे हेमवेलि नहिं जाय ॥ छरकि जल द ते जल-  
 द बहु दामिनि जात लावाय ॥ ६॥ पर्यस्ताप पनुतिल ॥  
 और विषे गुन और को जव कीजे आतेय ॥ तव पर्ज स्ताप-  
 नु ती इमि कवि कहहिं सचोप ॥ ६॥ उदा ॥ नही सकसु-  
 र पति अहे सुरपति लंद कुमार ॥ रतना कर सागर नही म-  
 न्य नगर वजार ॥ ६॥ हेतु पर्ज स्ताप पनुतिल साया ॥ पर्ज-  
 स्ताप पनुति विषे हेतु सहित जो कोइ ॥ धर्म छपावे हेतु ।  
 जुत वही नाम तव होइ ॥ ७॥ उदाहरण ॥ तम हर रवि नहिं  
 हरि भजन लगी होइ रविलोक ॥ कहुं तम रहै न हरि भजे ।  
 हमि जानहिं मनि ओक ॥ ७॥ भंता पनुतिल ॥ भंति  
 और की और जव करे बचन सों नास ॥ भंता पनुति ।  
 कहहिं तेहि कवि जन गिरि धर दास ॥ ७॥ उदाहरण ॥  
 जीवन दीने श्याम घन सजनी खनी आइ ॥ क्यों सरि  
 विन वसना के नहिं नहिं गोकुल राइ ॥ ७॥ छेका पनुति  
 ल ॥ संका नारो और की सांची बात दुगइ ॥ छेका पनु-  
 ति कहत हैं ताहि कविन के राइ ॥ ७॥ उदा ॥ अंचि वी-  
 रान सखन किय हों सिंगार समच्छ ॥ कुंजन में क्यों शा-  
 म सरि नहिं करील को वच्छ ॥ ७॥ कौतवा पनुतिल ॥  
 औरहि करे और इमि करि वर माति मान ॥ ताहि कौत-  
 वा पनु ती भूषन कहहिं मुजान ॥ ७॥ उदा ॥ कुचमि-  
 ल करि मन मथ मथन नित्य उर करत निवास ॥ पावस  
 मिस कर वज्र लै इंद्र देत वज्र वास ॥ ७॥ उत्पेक्षा लस-  
 ण ॥ उत्पेक्षा विधि तीन हैं इह विधि कहहिं प्रवीन ॥



वस्तु हेतु फल रूप करि जिनकी मतिरस पीन ॥ ७८ ॥ वस्तु  
 हेतु फल भेद वर्णन ॥ वस्तु द्विविध उक्ता सपद अत्र उक्ता सप-  
 द जानि ॥ हेतु सुफल सिद्धा सपद असिद्धा सपद मानि ७९  
 उक्ता सपद वस्तु त्रयोदाहरण ॥ हालाहल निकस्यो महा  
 भरत ज्वाल की जाल ॥ सिंधु मथत मानो कढ़ी बड़वानल  
 की ज्वाल ॥ ८० ॥ अत्र उक्ता सपद वस्तु त्रयोदाहरण ॥ वरष-  
 तमानो चंद्रमा किरिन वज्र कनवान ॥ सावन में धावन  
 लगे धनु यम गन अस मान ॥ ८१ ॥ हेतु सिद्धा सपदो त्रयो-  
 दाहरण ॥ तुल्य कारतैल सत मनु गही हिंदोरा डोर ॥ तोप-  
 ट छाया परत मनु श्यामल नंद किशोर ॥ ८२ ॥ हेतु असि-  
 द्धा सपदो त्रयोदाहरण ॥ तोई छन समता चाहत मानहु  
 ती छनवान ॥ छुरि महीप कमान सों लेहि मृगन को पा-  
 न ॥ ८३ ॥ फल सिद्धा सपदो त्रयोदाहरण ॥ मोहिलरिव  
 चपला सकुचि पुनि घन में जाति समाहु ॥ यों गुनितिय  
 मनु मंदिर मुख मंदिर बैठी आहु ॥ ८४ ॥ फल असिद्धा स-  
 पदो त्रयोदाहरण ॥ तो करि समता हेतु मनु सिंह करत  
 वनवास ॥ कुच समता हित सहत मनु गिरि हिम घास  
 बतास ॥ ८५ ॥ त्रयोदाहरण ॥ उन्मिष्टा व्यंजक ॥ उन्मिष्टा व्यंजक मनहुं  
 मनु जनु आदिक आहि ॥ जहां नही ए जानि ए गम्यो त्र्य-  
 द्धा ताहि ॥ ८६ ॥ गम्यो त्रयोदाहरण ॥ तोरी तीर तरु के ।  
 सुमन वर सुगंध के भीना जमुना तो पूजन करत वृन्दा  
 बज को पीन ॥ ८७ ॥ रूप कान्ति शयोक्ति लक्षण ॥ जहं व्यं-  
 जक उपमेय को कहि केवल उपमान ॥ रूप कान्ति शयोक्ति



तिहि वरनहिं बुद्धिनिधान ॥८८॥ उदाहरण ॥ ससि भें दि-  
 द्रुम ता विषें कुंदा वलिदरसाइ ॥ तापें सुक सुक पै धनुष  
 विवि सर सहित लाखाइ ॥८९॥ सापन्हव रूप काति शयो-  
 क्तिलक्षण ॥ पर्यस्तापन्हति सहित यही अलंकृत यव ॥  
 सापन्हव रूपक सहित अति शयोक्ति है तव ॥९०॥ उदाहर-  
 ण ॥ तुअ मुखमें निवसत सुधाही राधे सुकुमारि ॥ ताहि  
 बखाने चंदमा चिन बूझै अमधारि ॥९१॥ भेद काति स-  
 योक्ति लक्षण ॥ औरै पद भेदक जहां आति शयोक्ति में  
 होइ ॥ भेद काति शय उक्तिवर अलंकार है सोइ ॥९२॥  
 उदाहरण ॥ अवलोकनि बोलनि हैं सनि डोलनि औरै  
 और ॥ आबनि मृदु गावनि सवै औरै याके तौर ॥९३॥  
 संबधाति शयोक्ति लक्षण ॥ जहां देत संबध सों सुकवि  
 अयोगहि योग ॥ संबधाति शयोक्ति तिहि वरनत पंडित  
 लोग ॥९४॥ उदाहरण ॥ चलत अवध पुर पियत जलनभ  
 सरिको भरि मुंह ॥ कलस लेत ध्रुव धाम के तुम्हरे रामभ-  
 मुंह ॥९५॥ असंबधाति शयोक्ति लक्षण ॥ जोगाहिकरि-  
 य अजोग जवमति अनुसार प्रकास ॥ असंबध अति  
 शय उक्ति कहिये गिरिधरदास ॥९६॥ उदाहरण ॥ गवि  
 पावे सनमान क्यों तेज देखि तुअ भूप ॥ पवि सरतें कवि  
 बुद्धि ते सदा निरादर रूप ॥९७॥ अकमाति शयोक्ति लक्षण  
 ॥ काणा औ काज जवै दुहुं वरनिंय संग ॥ अकमाति श-  
 य उक्ति सों भूषन कविता अंग ॥९८॥ उदाहरण ॥ उलो सं-  
 ग गजकर कमल चक्र चक्र धर हाथ ॥ करतें चक्र सुनक



गिर धरतें विलग्यो साथ ॥ ८६ ॥ चपलाति शयोक्लिलक्षण  
 कारन के नाम हि सुने कारज आसुहि होइ ॥ चपला अपति  
 शय उक्ति यह अलंकार है सोइ ॥ १०० ॥ उदाहरण ॥ जान क  
 हो परदेश पिय सुनि सुखी यों वाल ॥ मुंहो कर पहुंची भई  
 पहुंची उर की माल ॥ १०१ ॥ अत्यंतानि शयोक्लिल ॥ पूर्वी-  
 पर कम ना मिले जाको गिरि धर दास ॥ अत्यंतानि शयो-  
 क्लितेहि कवि जन करहि प्रकास ॥ १०२ ॥ उदाहरण ॥ हनुमान  
 की पूर्य में लगन न पाई आगिलंका सिंगरी जरि गई गय नि-  
 शा कर भागि ॥ १०३ ॥ तुल्य योगिता ल ॥ किया और गुन  
 करि जहां धर्म एकता होइ ॥ कार्यन को कै इतर को तुल्य  
 योगिता सोइ ॥ १०४ ॥ प्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥  
 अरुन उदय अवलोकि कै सकुचहि कुवले चोर ॥ इंदु उद-  
 य लखि खेरिनी वदन वनज चहुं ओर ॥ १०५ ॥ अप्रस्तुत  
 तुल्य योगिता उदाहरण ॥ लखितेरी मुकुमारता एगीयाज-  
 गमाहि ॥ कमल गुलाव कठोर से काको भासत नाहि ॥  
 १०६ ॥ द्वितीय तुल्य योगिता लक्षणा ॥ तुल्य वृत्ति हित अ-  
 हित में जब वरनिय निरधारि ॥ तुल्य योगिता अपर यह व-  
 नहिं मुकवि विचारि ॥ १०७ ॥ उदाहरण ॥ गिरि धर दास ज-  
 हान में तुम अपति चतुर सुजान ॥ सर कीड़ा करि हरत हो  
 तिय को सरि को मान ॥ १०८ ॥ तृतीय तुल्य योगिता लक्ष-  
 णा ॥ सम करि एत दृष्ट गुन बहु को एकहि ल्याइ ॥ तुल्य  
 योगिता तीसरी ताहि कहैं कवि राइ ॥ १०९ ॥ उदाहरण ॥ मु-  
 म विधि बुध विधु विबुध पति विधु चार ॥ बुद्धि निधान ॥ मुम



भूषणै कल्पतरुगुननिध चतुरस्रजान ॥११०॥ दीपकल  
 जहं अद्वय्य अरु वर्य्य को धर्म एक युनिसेह ॥ अलंकार दीपक  
 इही नाम तासु कहि देहु ॥१११॥ उदा० ॥ सोहत भूपतिदान सौ फ  
 ल फूलन आणम ॥ ऊंचे तन सों हिरद बरगति सों अश्व सु  
 दाम ॥११२॥ आहत दीपकल ॥ आहत दीपक तीनविधि  
 पद आहत इक जानि ॥ अर्थी हति पद अर्थ की आहति  
 इमि पहिचानि ॥११३॥ पद आहति दीपक उदा० ॥ नंद सु  
 वन व्याहकरत वाही प्रीति अथोर ॥ परसति सुंदी सस  
 तिय परसत दृगदृग कोर ॥११४॥ अर्थी हति दीपक उदा०  
 ॥ दीर्घि संगर भक्त गज धावहिं हय समुदाह ॥ नरहिं रा  
 महिं बहु नदी नचहिं नर हरषाद ॥११५॥ पदार्थी हति  
 दीपक उदा० ॥ गरजत हैं रन रामजू गरजत हैं दस सीस ॥  
 धावत गिमि भरी खनि चरदुहुं दिशि धावत कीस ॥  
 ११६॥ प्रतिवस्तूपमालक्षण ॥ होहिं वस्तु प्रति सम जवै  
 उपमेयरु उपमान ॥ जुदे जुदे पद करि कही प्रतिवस्तूपम  
 जान ॥११७॥ उदाहरन ॥ साधु संग पायहु नहीं खल को  
 खल पन जाय ॥ सुधा पित्रा एहु अहि नहीं तौ गाल  
 दुख दाय ॥११८॥ दृष्टान्तल ॥ वर्य्य अवर्य्य दुहुन को  
 भिन्न धर्म दयाद ॥ जहाँ विंव प्रति विंव सों सो दृष्टान्त क  
 हाह ॥११९॥ उदाहरण ॥ रूपवती तुमहीं अहौ रती पशव  
 ती जानि ॥ नृप तुमहीं दानी अहौ दानी सुरतरु मानि ॥  
 १२०॥ निदर्शनालंकार ॥ तीन प्रकार निदर्शना कवि क  
 रनहिं सचिवेक ॥ सदृश दोऊ वाक्यार्थ को एकाएक ॥



नएक॥१२१॥उदाहरन॥जोदाता को सरलचित नहींकु  
 रिलता भास॥पूरन बिधु अकलंकता जानिय गिरिधार  
 दास॥१२२॥दुत्तिय निदर्शनाल॥उपमानो उपमेय को ध-  
 र्म धरे जवल्याइ॥पलरे हूं सुनि दर्शना दुत्तिय कहहिं क-  
 विराइ॥१२३॥उदाहरण॥लई चपलई मीन की तो दृग  
 नारि निहा रू॥नृप तो पानि उदारता लीनी सुरतरु चारु  
 ॥१२४॥तृतीय निदर्शनाल॥जहं सदर्थ असदर्थ को  
 बोध किया करि होइ॥तीजी तहां निदर्शना बरनहिं क-  
 बिसब कोइ॥१२५॥सदर्थ उदाहरण॥गुरुपादोदक सि-  
 र धरिय सदा जतावत सहु॥सिर धारत हैं गंग को महादे-  
 व करि नेहु॥१२६॥असदर्थ उदाहरन॥निडर पनो करि  
 कइन को नास जनावत जाति॥करत मसाल मुका बिले  
 वाती तुरत बुझाति॥१२७॥व्यतिरेकल॥वरनिय वरण्य  
 अवरण्य में जहं विशेष कबिराइ॥अधिक न्यून सम भेद  
 करि सो व्यतिरेक कहाइ॥१२८॥अधिक उदाहरन॥भूप  
 कल्पतरु से अहौ वैभव बुद्धि विशेषि॥तिय पल्लव से तो-  
 अंधार अधिक अमृत रस पेरि॥१२९॥न्यून उदाहरन॥  
 हरि से हरि जन जानु पै हरि घर घर बिश्राम॥कुरिल सप  
 से पै सरपट स ताहि करत तमाम॥१३०॥सम उदाहरन॥  
 जो निज धरे में परत चूर करत दलिताहि॥पथ संग पै  
 गहत नहि खल खल चंद सदाहि॥१३१॥सहोक्ति ल॥  
 जहं मन रंजन वानिये एक संग बहु वात॥सो सहोक्ति  
 आभन है ग्रंथन में बिख्यात॥१३२॥उदाहरन॥आई



चतुर्गर्हसि सतहताई के संग ॥ मन में तन सों मन मि-  
 ल्यो हुन नैनन के संग ॥ १२३ ॥ गीतिलक्षणा ॥ द्वै विध  
 कहहिं विनोक्ति सों कवि दुहि के सैन ॥ प्रस्तुत कह्यु  
 विन मूल सर कह्यु विन सोभा दैन ॥ १२४ ॥ प्रथम वि-  
 नोक्ति उदाहरण ॥ कवि विन नहि सोहै सभा निखि विन  
 सुधानिवास ॥ फलतन निषेधरदास विन गिरि धर मि-  
 री धरदास ॥ १२५ ॥ द्वितीय विनोक्ति ॥ धन्य धन्य तो  
 को धनी विना गाव सरसात ॥ राम राजत वसुप शवरत  
 स का सुनि दरसात ॥ १२६ ॥ समासोक्ति लक्षणा ॥ प्रस्तु-  
 त में जवहीं कुरंग प्रस्तुत हतौन ॥ समासोक्ति भूषन क-  
 हैं ताको कवि दुल्लक्षण ॥ १२७ ॥ उदाहरण ॥ सजनी रजनी  
 पाइ शशि बिहरत सभापूर ॥ अलि गत प्राची सु-  
 दित कल ॥ गिरि के भूग ॥ १२८ ॥ परिकल लक्षणा ॥ जहाँ वि-  
 शेष न दीजिये सह आसय आशित ॥ गिरि धरदास  
 वखानिये भूषन करि परवख ॥ १२९ ॥ उदाहरण ॥ चक्रपा-  
 नि हरि के ॥ निरखे अतुर जात न कि दूर ॥ सर सरमत घ-  
 न श्याम तुम ताप हरन सुद पूर ॥ १३० ॥ परिकल कुरल लक्ष-  
 ना ॥ जहाँ विशेष्य द्विवाचनिये अभिप्राय के संग ॥ परिक-  
 रं अंकुरतौ न है भूषन कविता संग ॥ १३१ ॥ उदाहरण ॥  
 मोरस नाने आज बहु पियतं कहैं कुचोल ॥ आवत  
 हीं पुज वावतो मूर पताप अतोल ॥ १३२ ॥ श्लेष लक्षणा  
 बहुत अर्थ तुत श्लेष है भूषन कहैं प्रवीन ॥ वार्य अ-  
 वार्य दुहंन के आशित भेद सुतीन ॥ १३३ ॥ प्रहता नेव



विषये दोहाहरण ॥ अहिसवार करि बान जिन नरकदा-  
 लक जित पाक ॥ विजय मिन बल बंधु पुत मयु कृत कुच-  
 री वाक ॥ १४४ ॥ अप्रकृता नेक विषय श्रेयोदाहरण ॥ तिय  
 तो ऐसी चंचला जीवन सुरवद समच्छ ॥ बसति हृदय घ-  
 न श्याम के वर सारंग सुअच्छ ॥ १४५ ॥ प्रकृता प्रकृता ने-  
 क विषय श्रेयोदाहरण ॥ गति बल्लभ कर कुसुम बरंग  
 श्याम घन चारु ॥ विष में सर पद में गहे जल चर के तु उ-  
 दारु ॥ १४६ ॥ अप्रस्तुत प्रशंशालक्षण ॥ अप्रस्तुत बरनन  
 विषे मस्तुत बरन्यो जाय ॥ अप्रस्तुत पर संसते हि कहहिं  
 कबिन के गय ॥ १४७ ॥ उदाहरण ॥ धन्य शेष सिर जगत  
 हित धारत भुवि को भार ॥ बुगे बाध अपराध विनु मृग को  
 करत अहार ॥ १४८ ॥ मस्तुतों कुरलक्षण ॥ द्योतन मस्तुत को  
 जबे मस्तुत ही सों होइ ॥ मस्तुत अंकुर आभरन ताहिक ॥  
 हहिं सब कोइ ॥ १४९ ॥ उदाहरण ॥ तूंगज तजि मंदा कि ॥  
 नी सरिता छुद्र अहात ॥ कहा अर्लीतजि मालती साल  
 मली टिग जात ॥ १५० ॥ पर्यायोक्ति लक्षण ॥ कहिय बात  
 रचनान करि पर्यायोक्ति बखानि ॥ मिसु करि करिज साधि  
 ये यही अलंकृत जानि ॥ १५१ ॥ प्रथम उदाहरण ॥ जाको  
 मन सब जगत मनि जग प्रमाण इक स्वांस ॥ तिनके सबके  
 चरण कों बंदत गिरि धर दाम ॥ १५२ ॥ द्वितीय पर्यायोक्ति उ-  
 दाहरण ॥ सुंदर श्यामा श्याम दोष धरि कर ही इत आज ॥  
 तबलों आवति होइ मै दा बन करि कछु काज ॥ १५३ ॥ ब्या-  
 जस्तुतिल ॥ ब्याजस्तुति निंदामि सो स्तुति जह बली जाइ



निदा मिरस्तुति मिसौस्तुति करचरै कवि राय ॥१५४॥ नि  
दा व्याजस्तुति का उदाहरण ॥ भक्त बलवत् धन श्यामज  
तुम मां सहै न और ॥ गरकत सबके न कहें नहुं साफ  
तुहें भोग ॥१५५॥ व्याजनिदा का उदाहरण ॥  
यसुना सुन अनिवकिनी कौन लिखा यह हठ ॥ पापिन  
मो निज बंधुको मान कायत भंग ॥१५६॥ व्याजनिदा  
का तुति का उदाहरण ॥ एक बार नामहि लिखे कास को  
दि अपघनाश ॥ धन्य संत जा उर कत से से के सब दास  
॥१५७॥ व्याज निदा लक्षण ॥ जहो निदा के बात करिनि  
दाही दासाय ॥ ताहि व्याजनिदा कहें ॥ अंगर कवि रा  
य ॥१५८॥ उदाहरण ॥ नाम कहार नहि विदे रहत सदा  
लयलीन ॥ गरकपाय महें तोहि धिक कामे बुद्धि निहीन  
॥१५९॥ आक्षेप लक्षण ॥ तीन भौति आक्षेप हैं कवि  
बानहि सविबेक ॥ कही बात कों समुझि कहु कर निषध  
सुखक ॥१६०॥ जहो निषेधाभास तहें आक्षेप द्वितीय ॥  
छिप्पो निषेध रहै जहो आक्षा प्रगर तृतीय ॥१६१॥ मयया  
क्षेप उदाहरण ॥ हरि दीजे बैकुंठ के उदायन को बास ॥  
सर्व भौल भूयति करी अपघवा अपनो दास ॥१६२॥ द्विती  
य आक्षेप उदाहरण ॥ मैं कवि हों नहि भूमि पति सुख  
से तुम जग माहि ॥ नहि मैं दूती राधिके तुम विन ही वि  
लखाहि ॥१६३॥ तृतीयाक्षेप उदाहरण ॥ जाहु जाहु फ  
देश पिय मेदिन कहु दुख भीर ॥ प्रान आहु ॥ जाहु  
गोरहि है दूत शरीर ॥१६४॥ विरोधाभास लक्षण ॥



भासे जहों विरोध सो अंदे बिगंधाभास ॥ धूषन इमिवरन  
 न करहिं कविजन गिरिधरदास ॥ १६५ ॥ उदाहरण ॥ १  
 मोहन है तोहि मोह अपति पाकी उर के माहिं ॥ चार चक्षु  
 नृपदृग दोऊ पंकज से दसाहिं ॥ १६६ ॥ विभावना लक्षणा ॥  
 पर विधि होति विभावना विन कारन के काज ॥ द्वितीय  
 अपूरन हेतु तें पूरन कारज साज ॥ १६७ ॥ प्रतिबंधक के  
 अछत हूँ कारज होइ तृतीय ॥ काज प्रकारन तें जहों सो  
 चतुर्थ कथनीय ॥ १६८ ॥ उपजै हेतु विरुद्ध तें कारज पंचम  
 सोइ ॥ कारन जनमें काज तें छरी विभावन होइ ॥ १६९ ॥  
 प्रथम वि० ॥ विन पाद कहि नैन तुव चूमत अरु न ल  
 खाव ॥ विन मेहं दी करतल अरु न विन जावक के पाय  
 ॥ १७० ॥ द्वितीय वि० उदाहरण ॥ एक चक्रारण बैठि रवि फि  
 रत कोरन कोस ॥ करत अरुध कर पग अरु न सारथि प  
 नो अदोस ॥ १७१ ॥ तृतीय वि० उदाहरण ॥ श्याम हृदय  
 सुमिरत तऊ अपति उज्जाल मन होइ ॥ जीव हरत परचूप  
 तऊ खगी लहत अघ खोइ ॥ १७२ ॥ चतुर्थ वि० उदाहरण  
 विद्रुम मैते हैं कटी कुंद कली समुदाय ॥ दिवस प्रकाशि  
 त देखियत न खत सहित हिजराय ॥ १७३ ॥ पंचम वि० उ  
 दाहरण ॥ सीतल मंद सुगंध जुत ताप चदावत पौन  
 फूल्यो लखि उड़पति उदय अवुंज अनंद भौन ॥ १७४ ॥  
 षष्ठी वि० उदाहरण ॥ पंकज तें निकली नदी सोहत ॥  
 गिरिधरदास ॥ कल्प वृक्ष तें रतन निधि निकलो स  
 हित हुलास ॥ १७५ ॥ विशेषोक्ति ॥ पुफलकारन तें



कारज उपजै नाहिं ॥ विशेषोक्ति रोहि कहत हैं कवि ज-  
न जग के माहि ॥ १७६ ॥ उदाहरण ॥ हृदय श्याम धन  
जनित रस करन सदाहि छन वास ॥ तऊ तहों को ताप  
नहि नै कहु होत हि रास ॥ १७७ ॥ असंभव लक्षणा ॥  
कार्य सिद्ध की वरनिये असंभाव्यताय च ॥ अलंकार  
उ ॥ आनिये सुकवि असंभवत च ॥ १७८ ॥ अलंकार  
हे मारि है कोटिन भरवल भौन ॥ इक बन चरब-  
न नामि है रह्यो जानतौ कौन ॥ १७९ ॥ असंगति  
लक्षणा ॥ काज हेतु दून दुहुन की असंभाव्यताय  
च ॥ अति विरुद्ध जाली पौ प्रथम असंगतित च ॥ १८०  
उदाहरण ॥ सिंधु जनित गरहर पियो मोर असुर समु-  
दाय ॥ नैन वान नैन न लग्यो भयो कीजे घाय ॥ १८१ ॥  
द्वितीय असंगति लक्षणा ॥ और और के काज कों और  
र और करि देहु ॥ द्वितीय असंगति समुभिये सुकवि स-  
मूह निसेहु ॥ १८२ ॥ उदाहरण ॥ शीश महावर और  
पै अंजन रंजन रूप ॥ अाजु भोर आये अही चारु बने  
वृज भूप ॥ १८३ ॥ तृतीय असंगतिल ॥ और कार्य आ-  
रंभिये और कीजिये च ॥ तीन असंगति में अहेत  
य असंगतित च ॥ १८४ ॥ उदाहरण ॥ दुख गोपन को  
करन हित चले गोप सिर मोर ॥ दुख गोपन कौ नाकि-  
यो अधि की कौनो और ॥ १८५ ॥ विषम लक्षणा ॥  
तीनि भौति वरनन करहिं कवि विषम अलंकार ॥ अ-  
न मिलते को संगतित जानहुं प्रथम मकार ॥ १८६ ॥



कारन औरैरा को कारज औरैरा ॥ तृतीय दृष्ट उद्यम  
 किये लहै अनिष्टहि संग ॥ १८७ ॥ प्रथम विषम उदाहरण  
 कहैं कोमल दशरथ सुवन कहैं कठोर धनु ईश ॥ कहैं स  
 मुद्र योजन अमित अति अगाध कहैं कीश ॥ १८८ ॥ द्वि  
 तीय विषम उदाहरण ॥ दीरव सिखारंग पीततें धूम कर  
 त अति श्याम ॥ सेत सुयश छाये जगत प्रगट आपतें  
 श्याम ॥ १८९ ॥ तृतीय विषम उदाहरण ॥ बनवारी हित  
 वनगई मिलेन गोप मयंक ॥ लरै नारि घर की सवै भूठ  
 हि देहि कलंक ॥ १९० ॥ समलक्षण ॥ वरनत तीन प्रका  
 र हैं सुकवि सभालंकार ॥ यथा योग को संग इह प्रथम  
 जानिये चारु ॥ १९१ ॥ कारन कारज दुहुन को एकहि  
 संग द्वितीय ॥ जाहित उद्यम करिय फल पाइय तो नत  
 तीय ॥ १९२ ॥ प्रथम सम उदाहरण ॥ उचित सीस पै सो  
 ह तो कस्तूरी को बिंदु ॥ सरस सरद राका बिषें उदित सु  
 ते सोइंदु ॥ १९३ ॥ द्वितीय सम उदाहरण ॥ बचन चंद्र  
 की चंद्रिका हरत ताप मुददानि ॥ बजरानी घन श्याम  
 सो सुत जायो छबि खानि ॥ १९४ ॥ तृतीय सम उदा ॥ १९५  
 हरि दूदम ब्रज में गई पाये गिरि प्रलाल ॥ ब्याह कियो  
 सुख हेतु सो देति सु कीया वाल ॥ १९६ ॥ विचित्र ल ॥  
 को यतन विपरीत जहं फल पावन के हेत ॥ सो विचि  
 त्र भूषन सौं वरनत बुद्धि निकेत ॥ १९७ ॥ उदाहरण ॥  
 सुख इच्छा सो सुख तजैं जोगी हर्ष समेत ॥ धन लीबे का  
 रन धरनि धनी धन हिं है देत ॥ १९८ ॥ अधिक लक्षण



जहाँ पृथुल आधार तें अधिद अधेय सुहोय ॥ पृथुल  
 आधार अधेय तें अधिक अधिक एतेय ॥ १८८ ॥ प्रथम  
 अधिक उदाहरण ॥ उपमा उदाहि अपार में नहिं समात सु  
 ख चंद ॥ ज्ञान कथा बिस्तार में ता न न न न न न न न न न ॥ १८९ ॥  
 द्वितीय अधिक उदाहरण ॥ किते ॥ पृथुल श्याम को रोम  
 रोम ब्रह्मंड ॥ किते जसोदा गोद जिन खेलत ब्रह्म आवं  
 ड ॥ १९० ॥ अल्प लक्षणा ॥ होय अल्प अधेय तें और अ  
 ल्प आधार ॥ गिरिधर दास बरवानिधेतिहि अल्पा लंका  
 र ॥ उदाहरण ॥ १९१ ॥ परमानहु तें परम लघु मंशन  
 जग बिरह्यात ॥ सोऊ तोरे हृदय में लोभी नाहि समा  
 त ॥ १९२ ॥ अन्योन्य लक्षणा ॥ जह उपकार परस्पर हि  
 वरनत करि निरधार ॥ ताको कवि जन कहत हैं ॥ पान्यो  
 न्या लंकार ॥ १९३ ॥ उदाहरण ॥ नृप तें सेना सोहती से  
 ना तें नर चात ॥ दूलह ल से बरात सो दूलह सो बरियात  
 १९४ ॥ विशेष लक्षणा ॥ तीन प्रकार विशेष ॥ कवि वर  
 नहिं गुनि श्रेय ॥ प्रथम ख्यात आधार विन जह वरनि  
 य अधेय ॥ १९५ ॥ एक वस्तु कहें वरनि एठोर अनेक हि  
 तीय ॥ जहाँ अल्प उद्यम किये बहुत सिद्धि तीतीय ॥  
 १९६ ॥ प्रथम विशेष उदा ॥ गएत मी हूँ तम रह्यो कोरी  
 बीच समाइ ॥ कमल बिना कमलालया वह वैरी दासा  
 य ॥ १९७ ॥ द्वितीय विशेष उदाहरण ॥ सोवत जागति दि  
 शि बिदिश देखि परें घन श्याम ॥ कंस हृदय आरुह्य  
 हरकृष्ण करैं विश्याम ॥ १९८ ॥ तृतीय विशेष उदाहरण ॥



गीता के पढ़तहि पढ़े चारि वेद सह तत्व ॥ चंदावनल ॥  
 खत हिलारव्यो गऊ लोक सुभसत्व ॥ २०६ ॥ व्याघातल ॥  
 जौन वस्तु तें होइ जोता सुविरोधी जौन ॥ तिही वस्तु सों  
 होइ जब है व्याघात सुतौन ॥ २१० ॥ उदाहरण ॥ जा सु  
 मिरन सों भक्त जन पावहि पदनिर्वनि ॥ ताही सों सनि-  
 जगत जन भ्रमत फिरहि अज्ञान ॥ २११ ॥ द्वितीय व्याघा-  
 तलक्षण ॥ काज विरोधी काजही जहाँ समर्थो जात  
 काज हेतु ही सों जहाँ सोदुजो व्याघात ॥ २१२ ॥ उदा ॥  
 कर्म करहि भवबंध हरयोगी श्रुति अनुसार ॥ पामं हंसकर  
 महि तजहि तिहि हर करि निरधार ॥ २१३ ॥ कारन माला  
 लक्षणा ॥ कार्य हेतु जहँ पूर्व को परको उलटि जो होइ ॥  
 ऐसी जहाँ परंपरा कारन माला सोइ ॥ २१४ ॥ उदाहरण ॥  
 दल तें बल बल तें विजय तातें राज हुलास ॥ कृत तें सुत  
 सुत तें सुजस जस तें दिवि महंवास ॥ २१५ ॥ उलटि यथा  
 धन गुन तें गुन पढ़न तें पढ़िबो गुरु तें होइ ॥ गुरु सुकर्म  
 तें सुभकरम करिये उत्तम जोइ ॥ २१६ ॥ एकावलीन  
 क्षणा ॥ ग्रहन मुक्ति की रीति सों जहाँ अर्थ की ओलि  
 अलंकार एकावलीनाहि कहहि कवि मौलि ॥ २१७ ॥  
 उदाहरण ॥ पढ़िबो गुनि वेलों गुनन अभ्यासन लों  
 जानि ॥ अभ्यासहु निज ज्ञान लों ज्ञान भक्तिलों मानि  
 २१८ ॥ माला दीपक लक्षणा ॥ मिलि दीपक एकावली  
 माला दीपक होइ ॥ इमि वरनहि आभन यह कविको  
 विद सब कोइ ॥ २१९ ॥ उदाहरण ॥ जगजगतें जस



धर्म ते धर्म करम ते धर्म ॥ करम वेद वचनानि ते भयो  
 धर्मि भारता ॥ २२० ॥ सार लक्षणा ॥ सार एक ते एक  
 जहं अलंकार तहं सार ॥ कहूं लुगि कहूं निंदमय कहूं उभय  
 व्यवहार ॥ २२१ ॥ स्तुति मय उदाहरण ॥ पूज्य नरन ते अ-  
 भार अति तिन तं हरि भगवान ॥ पूज्य हरि दु ते हरि भगत  
 जाउ उन को ध्यान ॥ २२२ ॥ निंद्य मय उदाहरण ॥ सब  
 ने लघु म सम सक ते एक कन पुनि परमानु ॥ परमानु  
 ते गुनि रहित जानत जिन हि जहानु ॥ २२३ ॥ उभय मय  
 उदाहरण ॥ बली विदश पुनि दस बदन तांते बालि  
 समर्पे बली बालि ते लोभ है हख्यो अनुज धन सर्व ॥  
 २२४ ॥ यथा सार लक्षणा ॥ क्रम ते उक्त पदार्थ को क-  
 रते अन्वय यत्र ॥ कवि भूषण भूषण अहे यथा संख्य व-  
 तत्र ॥ २२५ ॥ उदाहरण ॥ सुर को अरि को मित्र को भृत्य  
 रंक को भूय ॥ पूज्य हमारहु आदरहु रक्षहु देहु अनूप ॥  
 २२६ ॥ पर्याय लक्षणा ॥ क्रम ही सों जहं एक को होय अ-  
 नेक आधार के अनेक को एक ही है पर्याय प्रकार ॥ २२७  
 प्रथम पर्याय उदाहरण ॥ हुती देह में लरिकई बहुरित स-  
 रई जे र ॥ विरुधई आई अवी भजत नंद किशोर ॥  
 २२८ ॥ द्वितीय पर्याय उदाहरण ॥ मेरोई मन मोहित  
 जिहरित न कियो निवास ॥ ताहू को तजि को बस्यो अ-  
 वस्यो तिन के पास ॥ २२९ ॥ परिवृत्ति ल ॥ यो रोई दीने जहं  
 बहुत पदार्थ लेत ॥ अलंकार परिवृत्ति ते हि वर नहि  
 नुहि निकेत ॥ २३० ॥ उदाहरण ॥ विंध्या चल में गंग ॥

जल अर्क सुमन लै सेत ॥ दै के देव कपर्दि कहं जान ॥  
 रलेत ॥ २३१ ॥ पौ संख्यान लक्षण ॥ जहाँ सब ही वस्तु को  
 है निवेध दुकठाम ॥ दूजे पल थापन तहो पत संख्या प-  
 हनाम ॥ २३२ ॥ उदाहरण ॥ बाल मन में हर नहीं है पूरे  
 पितु धाम ॥ नहिं वज्र में धनु श्याम है पथ में लंगर  
 लाम ॥ २३३ ॥ विबाल्य लक्षण ॥ एक दिने जी सक को  
 तिन में कहि वै अद्य ॥ कै यह कै वह होइ गो सो विक-  
 ल्य अनवद्य ॥ २३४ ॥ उदाहरण ॥ बलजू अद्य न वाय  
 हैं हल कै तेरो शीश ॥ यम पुर के पुरथापि हैं तोहि सब  
 हिं अवनीश ॥ २३५ ॥ समुच्चय लक्षण ॥ एक साथ  
 ही भाव बहु कछु कारण तेयच ॥ अलंकार उर अनि  
 ये सुकवि समुच्चय तच ॥ २३६ ॥ उदाहरण ॥ फेरति  
 दग हेरति हरि दि दैति नाम सुनाय ॥ फिरति धिरति  
 उभ कति भुकति भक्त भरोखे आय ॥ २३७ ॥ द्विती-  
 य समुच्चय लक्षण ॥ एक एक ही हेतु ते जो कारज मिद्विहो-  
 य ॥ तेहि काजहि सब मिलि कोइ दुतीय समुच्चय सोय  
 ॥ २३८ ॥ गंगा गीता गुरु गुरु गोकुल श्री गिरि राज ॥ स-  
 सब मिलि कै देत है सत गति दिव्य दराज ॥ २३९ ॥ कार-  
 क दीपक लक्षण ॥ कम गति किया अनेक को कतीए  
 कहि होइ ॥ कविता उपकारक अहे कारक दीपक सोइ  
 ॥ २४० ॥ उदाहरण ॥ आवत पुनि अनमिल लखत  
 लखि हि पोर हरषात ॥ वेणु बजावत नाम लै तोहित गो-  
 कुल जात ॥ २४१ ॥ समाधिलक्षण ॥ अपर हेतु ते कार्य



जहाँ सुगम भाग्य वस होइ ॥ सो समाधिगत व्याधि वल-  
त कनि सब कोइ ॥ २४३ ॥ उदाहरण ॥ चलत कंत कहैं का-  
मिनी रो कन चहत प्रवीन ॥ पारजा ॥ मोहार पाय ॥ आपो  
पर जल हीन ॥ २४३ ॥ अत्यनी कल ॥ कसि अजीत नि-  
ज प्रभु कहैं ता पच्छी कहैं जव ॥ कौरे पार कम सस निज  
पत्य नी कहैं तव ॥ २४४ ॥ उदाहरण ॥ हरि मार विपुारि  
सों महा कोय बिलारि ॥ तदनु कारि मुनिवान को उर  
बेधत सर मारि ॥ २४५ ॥ काव्यार्थ पतित ॥ कौरे काज  
गुहीतिहि कहैं लघु में बाल गति ॥ होइ उक्ति ऐसी नहो  
हैं कव्यार्थ अपति ॥ २४६ ॥ उदाहरण ॥ शोक भरी मंदोदरी  
बोली करि सुविचार ॥ बल सली वाली वयो ॥ तोहि मार-  
त को मार ॥ २४७ ॥ काव्यलिंग लक्षण ॥ उक्त अर्थ जो पुष्ट  
नहिं बिना समर्थ न होइ ॥ ताहि समर्थिय युक्ति सों काव्य  
लिंग हैं सोइ ॥ २४८ ॥ उदाहरण ॥ अथ भव पारदार के  
पारजाल नहिं वार ॥ हैं सहाय रघु रायजू नी काखे वनहा-  
र ॥ २४९ ॥ अर्थान्तर न्यास लक्षण ॥ जहाँ विशेष सामा-  
न्य तें होय समर्थित रवास ॥ के सामान्य विशेष तें सो अ-  
र्थान्तर न्यास ॥ २५० ॥ प्र ७३ ॥ हौरे प्रताप गो कुल न यो  
कानहि करहिं महान ॥ हरिन कसि पुरा वण बयो ॥ वन सु-  
ख को न समान ॥ २५१ ॥ द्वितीय उदाहरण ॥ वरतां बूल  
प्रसंग तें यव जात नृपहाय ॥ तैं सेइ रतन प्रसंग तैं वसन  
खंडता साथ ॥ २५२ ॥ विकस्वर लक्षण ॥ वरि विशेष सा-  
मान्य पुनि पुनि विशेष वसि यव ॥ इक इक कोइ हइ ।

कमहिं तैं वाहिं विदुस्य तव ॥ २५३ ॥ विकस्वर भेद ॥ २  
 भेद विनस्वर में सुखरचनत सुकवि दुहैन ॥ जो विरे ५  
 अतिम सुतो नहुं उपमान कहैन ॥ २५४ ॥ प्रथम विनः  
 स्वर उदाहरण ॥ तुम देहौ मत देत हैं जिमि सुरत रुचन  
 मानु ॥ सुनितुम कम उरत महस्यो सुजन रीति जिमि भा-  
 नु ॥ २५५ ॥ द्वितीय वि० ३० ॥ दुर्गोधन नहिं मानि हे ख-  
 लकी औषधि है न ॥ नीचहि गुड़ सो सींचिये होति मधुर  
 ता येन ॥ २५६ ॥ प्रौढोक्ति लक्षण ॥ कारज गत उत्कर्ष  
 को जो न हेतु तेहि हेतु ॥ कारवर्गनय प्रौढोक्ति कवि मा-  
 नता सु कहि देतु ॥ २५७ ॥ उदाहरण ॥ जमुना नीर नहा-  
 त नित मन भोहन तन श्याम ॥ तो उज परसे कहिन  
 ता को उर है नाथ ॥ २५८ ॥ संभावना लक्षण ॥ जो यह  
 होइ तो होइ यह ॥ सो उक्ति लयव ॥ अलंकार संभावना  
 लनाहिं कवि जनतव ॥ २५९ ॥ उदाहरण ॥ जो बजरज  
 होते सुनी लगते लालन पाय ॥ जो रखा होते तो सुरत  
 जाते जहं ब्रजराय ॥ २६० ॥ मिथ्या ध्वनि सति लक्षण ॥  
 कथित भुराई ताहि अति हठ करि वे कोयव ॥ अ-  
 पर भुराई करिये मिथ्या ध्वनि सति तव ॥ २६१ ॥  
 उदाहरण ॥ बहति बारि परधर विरचि भुचि शीतल  
 करि आग ॥ हेत रुणी बसत रुणतन करहु विषयरस  
 त्याग ॥ २६२ ॥ ललित लक्षण ॥ प्रस्तुत गत वृत्तांत जो  
 वर्णनो यत नितो न ॥ अपस्तुत प्रति विवर्णन कहिय ल-  
 लित प्रति भौन ॥ २६३ ॥ उदाहरण ॥ अब यद्विज्ञाये



होत का चुगौ चिरेयन रवेतु ॥ चाहति उत्तरन पारतुं विना  
 नाव बिनसेतु ॥ २६४ ॥ प्रहर्षन लक्षणा ॥ तीन प्रहर्षन में  
 अहं प्रथम प्रहर्षन सोइ ॥ जतन बिना हीं लाभ जहं वा  
 छित फल को होइ ॥ २६५ ॥ उदाहरण ॥ जा को मिलि  
 वो चाहत है महत मनोहर प्रियाम ॥ सो बलि आई आपु  
 ही पूछत तुम्हरो नाम ॥ २६६ ॥ द्वितीय प्रहर्षण लक्षणा  
 वांछित फल तें अधिक फल बिन हीं प्रसजहं होइ ॥  
 कविरस वर्षण कहत है द्वितीय प्रहर्षण सोइ ॥ २६७ ॥  
 उदाहरण ॥ चह्यो सुदामा अल्प धन दियो भूरि भग  
 वान ॥ तिय हिय पिय दर्शन चह्यो आप्य दियो रति दा  
 न ॥ २६८ ॥ तृतीय प्रहर्षण लक्षणा ॥ तृतीय प्रहर्षण त  
 हें जहां फल साधक जु उपाय ॥ ताही को साधन करत  
 फल आपुहि मिलि जाय ॥ २६९ ॥ उदाहरण ॥ पिय पा  
 ती सुधिलेन कों निकरी नारि बजार ॥ उत तें आपति  
 मिलि गये गिरिधर लाल उदार ॥ २७० ॥ विषादन ल  
 जो विरुद्ध चित चाहतें सोई कारज होइ ॥ ताहि विषा  
 दन कहत है प्रलंकार सब कोइ ॥ २७१ ॥ उदाहरण ॥  
 हरि सों रति इच्छा करी अतिहि चाह सों बाल ॥ सुन्यो  
 जात मथुरा नगर सैं प्रकूर गोपाल ॥ २७२ ॥ उल्लास ल  
 जहं इक के गुन दोस तें होइ ओर को तीन ॥ उल्लासा  
 लंकार तें हि वानहि कवि मति भौन ॥ २७३ ॥ कहं गुन  
 तें गुन दोस तें दोस गुन हूं ते दोस ॥ दोस हूं तें गुन होत  
 इमि वानत कवि मति कौस ॥ २७४ ॥ गुन तें गुन यथा

तीरथ चाहें परसि मोहि कहि सुपावन संत ॥ शास्त्रचा-  
 हहि पढि सुफल मोहि कोरे विज्ञतु धवत ॥ २१४ ॥ दोष ते दोष  
 यथा ॥ या राजा के राज्य में भूलि जाय जनि सोय ॥ राज  
 भृत्य धन चारि हैं तब का कहि गेय ॥ २१५ ॥ गुन ते दोष  
 यथा ॥ सो घर को सुअभाग जह यज्ञ दान नहि होइ ॥  
 सो विद्या किहि काम जेहि शिष्य हल है न कोइ ॥ २१६ ॥  
 दोष ते गुन यथा ॥ समुभावन मायो चरण हरन  
 कियो तुव मान ॥ लाभ इतोई गुन हु जो बच्यो विभीषण  
 मान ॥ २१७ ॥ अवज्ञान लक्षण ॥ गुन ते गुन नहि होय  
 अरु नहीं दोष ते दोस ॥ कहहि अवज्ञा दोष विधिइ-  
 मि कवि कविता कोस ॥ २१८ ॥ प्रथम अवज्ञा उदा० ॥  
 सत कविता हूं के सुने नहि हल सै सदचित ॥ कसर उ-  
 पजे अन्न नहि वर सत हूं जल निज ॥ २१९ ॥ द्वितीय अवज्ञा  
 उदाहरण ॥ शिव तुम हा ला हल पियो कहा प्रभृत की  
 हानि ॥ राखि लगाये अंग नहि चंदन लघुता मानि ॥  
 २२० ॥ अनुज्ञा लक्षण ॥ जह अभिलाषा दोस की ता-  
 ही में गुन पाय ॥ तहां अनुज्ञा आभरन कहहि सकल  
 कवि गय ॥ २२१ ॥ उदाहरण ॥ हे विधि मोहि कव कह-  
 गे नरतन ते व्रज धूरि ॥ गो चारत मोपालत नर हों बात  
 वस पूरि ॥ २२२ ॥ लेश लक्षण ॥ दोस हि गुन करि वरि-  
 ये गुन हि दोस करि यत्र ॥ कवि कुलेश बनन न कहि ॥  
 लेश अलंकृत तत्र ॥ २२३ ॥ उदाहरण ॥ वह अरसिक प-  
 सुही भले बधिकहि देखि पराहि ॥ राग रसिक मृग मोह



वसवरवस गोर जाहिं ॥२८४॥ मुद्रालक्षण०॥ प्रस्तुत के  
 वरनल तिथें कंदे सोर को नाम ॥ पै न विदित सह पाठ के  
 सो मुद्रा गुन धाम ॥२८५॥ उदाहरण॥ परम भाग्य तह  
 दजित मत्त सेय पद दोय ॥ हरी अवसार प्रमाण यदो  
 हार्दित व होइ ॥२८६॥ भस्मावली लक्षण०॥ जा मुनिदि  
 त सह पाठ है कंदे ताहि को नाम ॥ प्रस्तुत के वरन नति  
 पै रत्नावलि तिहि राय ॥२८७॥ उदाहरण०॥ वास करत  
 आराम में भारत हित न आनंद ॥ देत लक्ष मन को गु  
 निन शत्रु दमन नंद नंद ॥२८८॥ तदुलक्षण०॥ रूप  
 आदि गुन पुंज में जो निज गुन तजितौ न ॥ दूजे को गु  
 न लेहि तहें है तदुन गुन भौन ॥२८९॥ उदाहरण०॥ ति  
 य हिय ही ॥ धुक धुकी नील वराण हस्माय ॥ पिय हिय  
 की कंचन वरन परे परम पाछाय ॥२९०॥ पूर्व रूप ल०॥  
 पूर्व रूप है निज गुन हित निज पुनिति ज गुन लेइ ॥ दुति  
 य वस्तु ना सेहु न हीं मिटे अवाण्य सेइ ॥२९१॥ प्रथम उदा  
 हरण ॥ जपन लाल माला लिये लाल नाम तु व बाल  
 ॥ मनिका पासत अमित पुनिकारत ल दुति परिलाल  
 ॥२९२॥ दुतिय उदा०॥ कहा भयो जो करन को मन भ  
 यो न राय ॥ रही जगत में आपु की दीह दान विधि का  
 य ॥२९३॥ अत दुलाल०॥ संगी को रूप आदि गुण कत न अं  
 गी कार ॥ ताहि अत दुलाल आपा भरन वरन त बुद्धि रंगार  
 ॥२९४॥ उदाहरण०॥ सदा श्याम हिय तिय वसति तिय हि  
 य हरि विश्याम ॥ तऊन गोरे होत हरि श्यामा होति न ।

श्याम ॥ २८५ ॥ अनुगुनलक्षण ॥ निजगुन सो सर सात जो ते सो  
 लहे सहाय ॥ तने अरु अधिकाय सो अनुगुन नाम कहा ॥  
 य ॥ २८६ ॥ उदाहरण ॥ कुरकी को पुट दे कियो निंब पत्र रा-  
 स काथ ॥ ता करुता नहि कहि सके जो पदु पंडित नाथ ॥ २८७ ॥  
 मिलित लक्षण ॥ समता ते इक वस्तु में अपर वस्तु छिपि-  
 जाय ॥ कछुन भेद जान्यो पौरे मीलित तहां लखाय ॥ २८८ ॥  
 उदाह ॥ पान पीक अध्यान में सबी लखी नहि जाय ॥ क-  
 जरणी अखियाँ न में कजरणी न लखाय ॥ २८९ ॥ सामान्य-  
 ल ॥ बहुत वस्तु सम होय जहं नहि विशेष लखि जाय ॥ जा-  
 नि पौरे सब एक से तहं सामान्य कहाय ॥ २९० ॥ उदा ॥ खरी  
 दीप माला विषे बाला सति अभिराम ॥ को तिय को दीपक ॥  
 मिरवाम नहि विचारत श्याम ॥ २९१ ॥ उन्मीलित ल ॥ समता  
 ते इक में अपर वस्तु जाय छिपि जत्र ॥ तदपि भेद कछु लखि  
 पौरे उन्मीलित हेतव ॥ २९२ ॥ उदा ॥ हरित माल के कुंज में नहि  
 लखाहि छु बिखानि ॥ पीतांबर में सेत हिय तिय पिय को पहिचा-  
 नि ॥ २९३ ॥ विशेष ल ॥ समता संजुन वस्तु में कछु विशेष दसा-  
 य ॥ जाते जान्यो जाय वह तिहि विशेष दहराय ॥ २९४ ॥ उदा ॥ सेत  
 हंस क सेत है वै से पौरे लखाय ॥ प्रय पानी अपो धौरे भेद सकल  
 खलि जाय ॥ २९५ ॥ उत्तर ल ॥ अभिप्राय संयुत जहां गूटे उत्तर दा-  
 न ॥ अलंकार उत्तर तहां वरनत बुद्धि निधान ॥ २९६ ॥ उदा ॥ ब-  
 सन कहौ कैसे पथिक है सुनो समाधाम ॥ पौ होवा अपास में सब  
 विधिको आपाम ॥ २९७ ॥ चित्र लक्षण ॥ वही पत्र उत्तर कहै क-  
 हिक हियत करि निधार ॥ अरु इक उत्तर पत्र बहु से चित्रालंकार



३०८ एक प्रतीत को उदाहरण ॥ कोकिल मुद्रा नदक  
र कामहि बल सुविशाल ॥ केकी बहुत बज विधे को-  
समंत माहि पाल ॥ ३०९ ॥ अनेक पक्ष को तर ॥ कौन वा-  
ले के दार में का को थल के दार ॥ कोहै एक औ पधी हर  
उत्तर विधार ॥ ३१० ॥ सूक्ष्म लक्षण ॥ या आशय लखि  
वे को चेष्टा साभिप्राय ॥ उत्तर हूँ अनूप जहं तहो सु-  
दृढ कवि रथ ॥ ३११ ॥ उदाहरण ॥ लखन लखी रघुनाथ  
हिमि निशि चर आहन काम ॥ तर्जनि धरित कोनी ॥  
औं चिलई तव मन ॥ ३१२ ॥ गिहिन लक्षण ॥ ४ ॥ ० ॥  
कोक पारुषांत लखि नहि प्रकरीय ॥ चेष्टा साभिप्रा-  
य करि पिहित लंका गिन ॥ ३१३ ॥ उदाहरण ॥ यात ल-  
ख आनि निरखि जान कल ॥ भाव ॥ आनुर धतर  
तापरी दई आ ॥ ली वात ॥ ३१४ ॥ या जो किल लक्षण ॥  
जहं गोपन आकार को को वात कहि अन्य ॥ तहं वा-  
जो किल वरान हो ॥ कवि धरनी धन्य ॥ ३१५ ॥ उदाहरण ॥  
आरजन मानी नेक हूँ बरज हो बहु वार ॥ वाचन बहुत  
गुलावत रु ॥ कौन लंगी न न दार ॥ ३१६ ॥ गूढो किल लक्षण  
जहं कोक कहि और सो और हि देइ सुनाय ॥ सात लख  
हिं न निकट जन तहं गूढो किल कहाय ॥ ३१७ ॥ उदाहरण ॥  
गूढो किल के दोय भाति दसहि ॥ वहु को पयुग देखियै क-  
हुं श्रेय जुत नाहि ॥ ३१८ ॥ श्रेय युक्त को उदाहरण ॥ जाहु  
परोसीया समय या दिन आवति वात ॥ आर पाहन  
अरु चित सुरति करी गी रात ॥ ३१९ ॥ अश्रेय रहित को उदा-

या छन मंगल जाय हैं भीर हेतितर मांभ ॥ ताते जाय नहा-  
 य हैं सखी सकेली मांभ ॥ ३२० ॥ विदुतोक्ति लक्षणा ॥  
 गुप्त अर्थ जहं आपही कवि सूचित करि देत ॥ अलंकार  
 विदुतोक्ति तेहि वरनत बुद्धि निकेत ॥ ३२१ ॥ लक्ष्य माहिं  
 विदुतोक्तिके गुप्त अर्थ विधि दीय ॥ शब्द शक्ति सों होय  
 कहूं अर्थ शक्ति सों होय ॥ ३२२ ॥ शब्द शक्ति को उदाहरण  
 जौ गोरस चहू न लियो तो आबहु समधाम ॥ यों कहि ।  
 याजक सों हरि हि किय सूचित रति ठाम ॥ ३२३ ॥ अर्थ श-  
 क्तिके उदाहरण ॥ भोगे मन न अचात है सुनिभूठी रस  
 वात ॥ दूमि कहि भूठी बाल तब लाल लगाई गात ॥ ३२४  
 युक्ति लक्षणा ॥ निज समीहि गोपन करे कछु किया करि  
 यव ॥ गिरिधर दास बखानिय युक्ति अलंकार तव ॥ ३२५  
 ॥ उदाहरण ॥ हरि सों रति करि तिय उठी आइ गई  
 तित सास ॥ चौर फसाइ करील सों दाढी लेत उसास ॥  
 ३२६ ॥ लोकोक्ति लक्षणा ॥ लोक प्रवाद बखानिये वच-  
 न बीच जेहि ठौर ॥ अलंकार लोकोक्ति तेहि वरन हि बु-  
 ध सिर पौर ॥ ३२७ ॥ उदाहरण ॥ कहान सावत शोक कों  
 सूखो ज्ञान वनाय ॥ ऊधो आप सुनी कहूं प्यास सोस  
 तें जाय ॥ ३२८ ॥ छंदोक्ति लक्षणा ॥ अपर अर्थ व्यंजक  
 जहां सोइ लोकोक्ति लावाय ॥ वचन न कीरचना न तें  
 तहं छंदोक्ति कहाय ॥ ३२९ ॥ उदाहरण ॥ दूती पद वृ-  
 ती कहा दोनो नहि पतिबंध ॥ दोनो बनि आपो भलो  
 सोनो और सुगंध ॥ ३३० ॥ वक्तोक्ति लक्षणा ॥ सुनत ।



वाक्य रोपदिचस रचै अर्थ जहं और ॥ कहें शेष हं का  
 कुमों वक्त उक्ति तिहि दौर ॥ ३३१ ॥ शेष वक्तोक्ति उदाहर-  
 ण ॥ मानत जो गहि सुमति वर पुनि पुनि हे गति न देह ॥  
 मानत जो गी योग को नहिं हम करत सनेह ॥ ३३२ ॥  
 काकु वक्तोक्ति यथा ॥ तोहि त्यागि श्यामहि सखी सख-  
 तिय नाहि सुहाय ॥ अस्तिय नाहि सोहाय सुनिबोली  
 नैन चढ़ाय ॥ ३३३ ॥ स्वभावोक्ति लक्षण ॥ शिशुत्वादि  
 जो जाति है तदगत जो न सुभाव ॥ ताको बरनन कर-  
 त तहं स्वभावोक्ति कविराय ॥ ३३४ ॥ उदाहरण ॥ धूर  
 धूरे धरनि में धल भर परे पाय ॥ लाल लट परे आ-  
 खरनि भाषत सरित ह्वाय ॥ ३३५ ॥ भाविक लक्षण  
 भूत भाविष्य पदार्थ को जहां सकल कविराय ॥ बरन-  
 त कर्म प्रत्यक्ष तहं भाविक भाव्यो जाय ॥ ३३६ ॥ भूत  
 प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ विष्णु वजावत मधुर सुर कोरि लजावत मे-  
 नु ॥ ऊधो आवत अजहुं हरि सांभ चरावत धेनु ॥  
 ३३७ ॥ भविष्य प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ ग्राम सिंह नृप ह-  
 द में श्याम सिंह सम विप्र ॥ में देखति कर पकरि मो-  
 हि जात सुरधरि छिप्र ॥ ३३८ ॥ उदात्त लक्षण ॥  
 स्वाधनीय जो चरित सो अंग और को होइ ॥ अरु अ-  
 तिसंपति वरनिबोहै उदात्त विधि दोय ॥ ३३९ ॥ प्रथम  
 उदात्त उदाहरण ॥ मुनि जन आवहिं जासु पद पर  
 सन पावहिं रंच ॥ ते कुब जाके भवन में राजत बैठे-  
 मंच ॥ ३४० ॥ द्वितीय उदात्त उदाहरण ॥ तो घर में

डारहिं जनी घरी मनी ननु हारी ॥ तिन ते भे नम नम वने  
 लखहु मेहु अनु हारी ॥ ३४१ ॥ अत्युक्ति लक्षण ॥ ज-  
 हैं उदारता सूरता विहादिक की वक्ति ॥ अत्युक्ति ॥  
 होयत हैं अलंकार अत्युक्ति ॥ ३४२ ॥ उदारता यथा ॥  
 भूपति तैरे दान सौ धरा धार्यो सुमेर ॥ पर कहें देत  
 मदच्छिना सूरत हैं बहु फेर ॥ ३४३ ॥ सूरता यथा ॥ तो  
 यता पडर मान ता ज रा नु यथे यम लोक ॥ इत न भा-  
 रे आदय हत ऊह दय सु र औक ॥ ३४४ ॥ विहादिक यथा ॥  
 जावन विहादि निजाति है न जाति स्वास शिलि ज्वाला  
 तावन के साखी गिरे राखी है तत्काल ॥ ३४५ ॥ निह-  
 क्तिलक्षण ॥ जहां योग वसनाम को कल्पित सौरे  
 अर्थ ॥ तहं निरुक्ति भूषन कहें कवि कुल तिलक स-  
 मर्थ ॥ ३४६ ॥ उदाहरण ॥ जौं परकीया त्यागि कै च-  
 ले विदेश सचैन ॥ तौ विषई तुम सांच हौं अवला ॥  
 मानहि लैन ॥ ३४७ ॥ प्रतिषेध लक्षण ॥ जहां प्रसि-  
 द्ध निषेध को अनु कीर्तन दरसाय ॥ प्रतिषेधालंका-  
 ति कहहिं तिहि अति मति कविराय ॥ ३४८ ॥ उदाह-  
 नहि विराट को पाक धर जहं कर छी व्यवहार ॥ यह  
 संगर जामें चलैं बर छी वारंवार ॥ ३४९ ॥ विधिल ॥  
 सिद्ध वस्तु ही को जहां कोऊ करै विधान ॥ विधि भूष-  
 न तहं जानिये दूहि विधिकहं हिं सु जान ॥ ३५० ॥  
 उदाहरण ॥ कम सौ पहुंचत अरक जब स कम कर-  
 क नगीच ॥ जीवन मद शति होत तव जीवन मद



जगबीच ॥३५२॥ हेतुलक्षणा ॥ जहां काज के साथ ही  
कारन दारयो होइ ॥ कैदो उन की सकता होत हेतु वि-  
धि दोइ ॥३५२॥ प्रथम हेतु उदाहरण ॥ गरजि उदे घन  
माननी मान मिटावन काज ॥ धनु रंका सो भूपनै श-  
नुन सावन आज ॥३५३॥ द्वितीय हेतु उदाहरण ॥ मो-  
हि परम पद मुक्ति सवतो पद रज घन श्याम ॥ तीनि  
लोक को जीतिवो मोहि बसिवो व्रज ग्राम ॥३५४॥ दु-  
त्यर्थी लंकार समाप्त ॥ अथ शब्दालंकार ॥ इति अ-  
र्थी लंकार सत वानि बुद्धि अनुसार ॥ वनत गिरि धर  
दास कवि अब शब्दालंकार ॥३५५॥ अनुप्रास लक्ष-  
णा ॥ स्वर विन व्यंजन वान की जहं समता दसाइ ॥  
स्वर संयुक्तहु कहं हितेहि अनुप्रास कवि राइ ॥३५६॥  
उदाहरण ॥ मन मोहन सोहन भले लसत सीलेने-  
न ॥ ठाढ़े गुन गाढ़े अहैं कहत छवीलेनेन ॥३५७॥  
अथ छेकानुप्रास लक्षणा ॥ समता बहु व्यंजनन-  
की कम सो जहं इकवार ॥ तहं छेकानुप्रास है सुनिये  
सुकवि उदार ॥३५८॥ उदाहरण ॥ शुभ सोभा सोहैं  
सही बारीबर चल चाल ॥ सोना सीनो रसरसी बनी ब-  
नै बलि बाल ॥३५९॥ वृत्त्यनुप्रास लक्षणा ॥ समता  
बहु व्यंजनन की जहं विनु कम इकवार ॥ कै कम सो  
बहु बार तहं वृत्ति अलं कति चार ॥३६०॥ एकहु व्यंज-  
न की जहां समता करति निवास ॥ एक बार बहु बार  
करि तहां वृत्त्यनुप्रास ॥३६१॥ एकवार बहु व्यंजन सम-

ता यथा ॥ लसे शेल पर हूप धरन ववन हरि रस साय ॥  
 स्वसे मुख मय चारु रुचि धरे राधिका हाथ ॥ ३६२ ॥  
 कम से बहु बार व्यंजन समता यथा ॥ बैन बने बनिता  
 मुख दवज बिधु बुध बुधि ऐन ॥ नील नील नल ना-  
 च्छ हरि को किल कल किल बैन ॥ ३६३ ॥ एक व्यंजन को  
 एक बार समता यथा ॥ ठाढ़े गाढ़े गुन वनो सरि वदेखो  
 हम श्याम ॥ पीति मंत सोहैं महानि सि बसि श्यामा  
 धाम ॥ ३६४ ॥ एक व्यंजन की बहु बार समता यथा ॥  
 घेरि जोर कीरी सोर गुरु चुरे वारि धरे घोर ॥ फिरि फिरि  
 डोरें वारि गिरि वर पर चारो ओर ॥ ३६५ ॥ श्रुत्यनु प्रास ल-  
 क्षणा ॥ तालु आदि कथान कृत व्यंजन को उच्चार ॥ ज-  
 हां सादृश अनुप्रास श्रुति वरनिय करि निरधार ३६६ ॥  
 चतुर जानकी चारु रुचि चंचल अछ प्रतच्छ ॥ भ-  
 कति चंद मुख छनहि छन जाइ भोगे खे स्वच्छ ॥ ३६७ ॥  
 अंत्यानु प्रास लक्षणा ॥ आदि स्वर संयुत जहां व्यं-  
 जन आहत होइ ॥ सो अंत्यानु प्रास है कहियतु कां-  
 तहि जोइ ॥ ३६८ ॥ उदाहरण ॥ नीरधीर पर पीर हर सं-  
 ग अहीर की पीर ॥ नीर तीर जहं कीर बहु लसे सीर धरि  
 बीर ॥ ३६९ ॥ लाटानु प्रास लक्षणा ॥ शब्द अर्थ द्वय  
 दुहुन की जहं पुन रुक्ति प्रकास ॥ तात पर जमहं भेद  
 कछु नहं लाटानु प्रास ॥ ३७० ॥ उदाहरण ॥ राजिव  
 मुख राजिव नयन लखे नयन की कोर ॥ करि करु-  
 ना कहना करन लखे चोरों दुख घोर ॥ ३७१ ॥ यमक



लक्षणा॥ स्वरव्यंजन गनकी जहां आचति सुकवि  
 वरिवण्ड॥ यमक सोई है दोय विधि इक अखंड इक  
 खण्ड॥ ३७२॥ सो अखंड सार्थक संबै शब्द जमक को  
 होय॥ खंड शब्द सार्थक कोऊ कोऊ निरर्थक सोय॥  
 ३७३॥ अखंड यमक उदाहरण॥ भूपकरन कुंडल  
 करन करन शब्द मदनास॥ आदि बरन नर बरन बित  
 च जल बरन प्रकास॥ ३७४॥ खंड उदाहरण॥ जन  
 उधरन अंधुज धरन वर अधरन छवि खानि॥ सर-  
 न सुखद अरि सरन जित सरन बित मुद दानि॥  
 ३७५॥ शब्द अर्थ॥ आभरन दोऊ द्वि विधि भये  
 समाप्त॥ इन को पहि गुनि गुनिन को कहै है अति सु-  
 ख प्राप्त॥ ३७६॥ कवि भारत भूषण परम भारत भू-  
 षण एहु॥ भारत चरन सनेहु धरि सत कवि द्वि प-  
 दितेहु॥ ३७७॥ विधि विधि गुनि शिव शिव द्वि गुनि  
 करन चरन राज प्राप्त॥ बार बार तिन के चरन बंदत  
 गिरि धरदास॥ ३७८॥ इति श्री नंदनंदन पदारविंद  
 मल्लिंद धनाधीश श्री बाबू गिरि धरदास कवीश्व-  
 र विरचित भारती भूषण मल्लिकारं समाप्तम् ॥

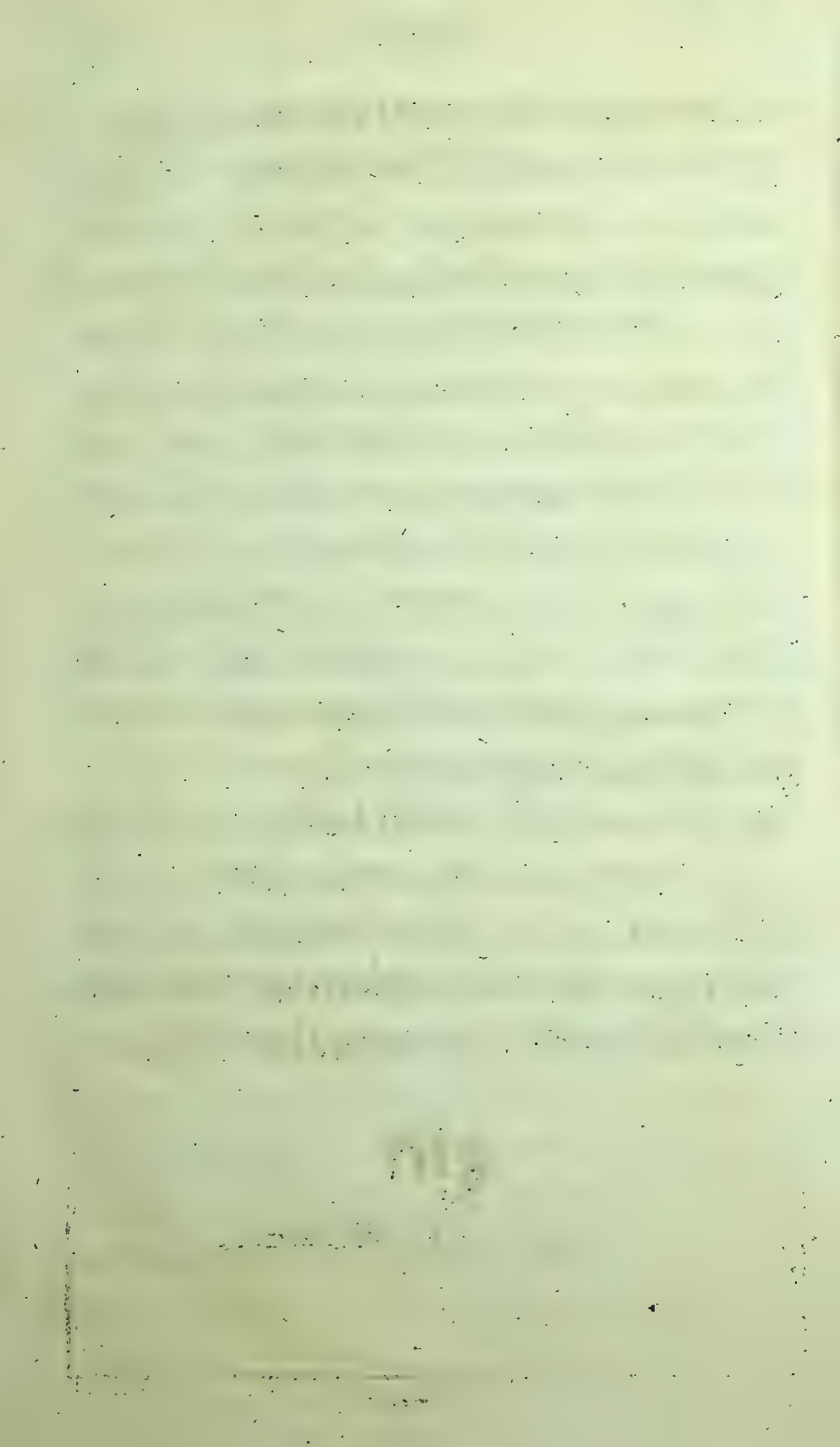
# इति

SPS

891.2 G 87 B



6346

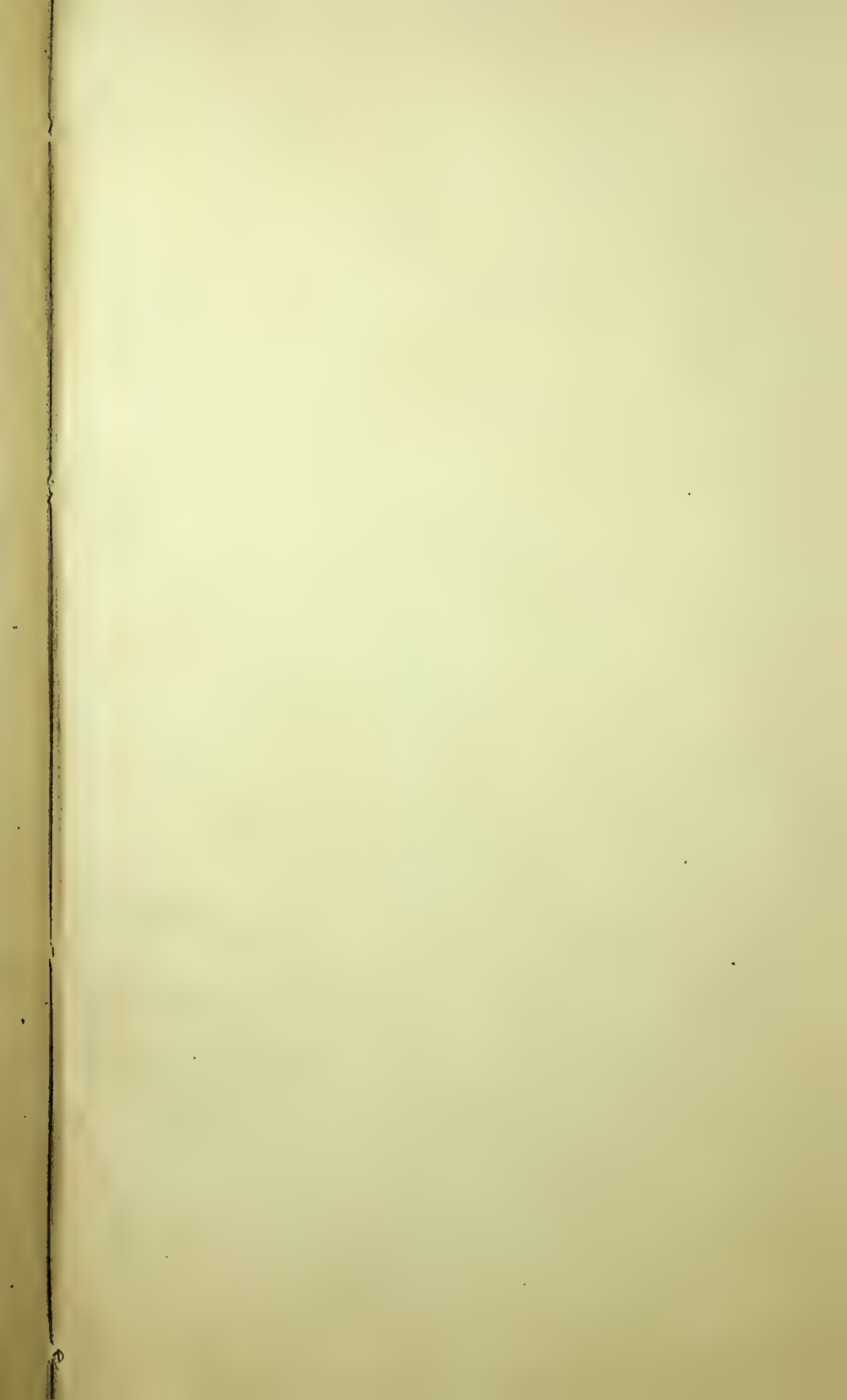




| नामकिताब          | नामकिताब            | नामकिताब          | नामकिताब          |
|-------------------|---------------------|-------------------|-------------------|
| द्वन्द्वसभा       | गोपीचंदभरती         | लीलावती           | संस्कृतउर्दूदीका  |
| विक्रमविलास       | कथा श्रीगंगाजी      | पठचारियोंकीपुस्त  | सहित              |
| छेतालपञ्चीसी      | अवधयाना             | क ४ भाग           | वनरखति            |
| खिंदासनबत्तीसी    | भरतीगीत             | संस्कृतकीपुस्तकें | विलुहारीतस्मृति   |
| पद्मावतीखण्ड      | दानवीलाबागली        | लघुकोमुकी         | सहिन्नसोत्र       |
| शुकवहत्तरी        | ल                   | निदानचन्द्रिका    | संस्कृतभाषादीका   |
| पकावलीमुमन        | दोहाबलीरत्ना        | अमरकोशतीनों       | सहित              |
| चहारदरवेश         | ली                  | कांड              | अमरकोशतीनोंकी     |
| क्रिस्ताज्ञातमताई | गोकर्णमहात्म        | पंडसहायन          | गड                |
| आपूर्वकथा         | क्रीगोपालसहस्र      | जिर्णयसिन्धु      | याज्ञवल्क्यस्मृति |
| क्रिस्तागुलशेनोवर | भाष                 | संग्रहशिरोलता     | सन्ध्यापद्धति     |
| सहस्रजनीचरित्र    | कथासत्यभारतया       | भगवद्गीतासीक      | वतार्क            |
| राविशन्नीलोकाद    | हनुमानबाहुक         | विलुभागवत         | भागवद्गीतादीका    |
| निहास             | जगकपञ्चीसी          | भविष्योत्तरपुराण  | हविर्ष            |
| वैद्यक            | ज्ञानन्दाभ्युतवर्षि | आपराधभजनमो        | भगवद्गीतादीका-    |
| निघण्टभाषा        | राी                 | दुर्गापाठसटीक     | ज्ञानन्दरिगि      |
| अमरविनोद          | वनयाना              | दुर्गीस्तोत्र     | गीतगोविन्द        |
| वैद्यजीवन         | कायस्थवर्णनिरु      | कायस्थपुनभास्कर   | कथासत्यनारायण     |
| औषधिसंग्रहकल्प    | परा                 | कायस्थधर्मनिरु    | परमार्थसार        |
| वल्ली             | विहारविद्वान        | परा               | शार्ङ्गधरसंहिता   |
| अमृतसागर          | समरविहारविद्वान     | तथाकोटा           | पद्माशरी          |
| वैद्यमनोत्सव      | कल्पभाष्य           | मथुरासभा          | श्रीश्रीबोध       |
| ज्योतिष           | हरसी                | ज्योतिष           | लघुजातक           |
| जातकचन्द्रिका     | अक्षरावली           | सुहृत्तगाणपति     | घटपंचाशिका        |
| जातकालंकार        | स्वयंबोध            | सुहृत्तचक्रदीपिका | सामुद्रिक         |
| देवदाभरण          | ज्ञानचालीसी         | सुहृत्तचिन्तामणि  | सरिषेतालीम        |
| ज्ञानखरोदय        | दोहाबली             | सुहृत्तदीपिका     | कीपुस्तकें        |
| रमलसार            | बालाबोध             | सुहृत्तमार्तपटस   | संस्कृत           |
| इन्द्रजाल         | विद्यार्थीकीप्रथम   | सुहृत्तजातकसटीक   | अनुपाठ १ भाग      |
| मुतकरकात          | पुस्तक              | जातकालंकारस       | तथा २ तथा ३ भाग   |
| अनिश्वरकीकथा      | दिताबजंत्री         | जातकाभरण          | धास्वर्ण          |
| ज्ञानमाला         | गाणितकामधेनु        | होरामकरन्         | वागरी             |

| नामकिताब            | नामकिताब             | नामकिताब           | नामकिताब                |
|---------------------|----------------------|--------------------|-------------------------|
| बर्षी माला १ भाग    | दुर्गलस्तिका की कृति | हिंसायतन का सुन्दर | एक तात्त्विक का सुन्दर  |
| तथा २ भाग           | हास                  | रिंसाय             | नकासुद्धि का वध २५      |
| तथा कैथी फारसी      | भारत वंशोपकाद        | पट्टा वरवत कैथी    | सन् १८७० ई०             |
| नागरी हस्त लिपि     | तिहास                | तथा कल्लिखत        | एक चौपायों की मदा       |
| दात                 | हितोपनिषद्           | रजिस्टर का रिखल    | खिलत बेजा का            |
| अक्षरारम्भ          | बाला भूषण            | रवारिज दुलखा म     | १ सन् १८७१ ई०           |
| वर्ण प्रकाशिका      | पद्य संस्कृत         | दर्भा              | मज भूषा नाजिता          |
| १ भाग व २ भाग       | भाषा काव्य संग्रह    | रजिस्टर हाजरी पा   | कौजदारी १० सन्          |
| सुन्दर धुर की कदानी | कविन रत्नाकर १ भा    | ४ भाग              | १८७२ ई०                 |
| धर्म सिंहा का वृत्त | तथा २ भाग            | ज्ञानून            | एक भाग भूषा             |
| शिक्षा पत्नी        | मंगल कोश             | नागरी              | मगरवी व शिक्षा पत्नी    |
| शिशु बोध            | अंक प्रकाश           | एक लगान मगरवी      | १८ सन् १८७३ ई०          |
| पत्र हितोपनिषद्     | गणित प्रकाश १ भा     | दशियाली १० सन्     | तरवी मज भूषा            |
| पत्र दीपिका         | तथा २ भाग ३ भा       | १८५८ ई०            | जाबिता कौजदारी          |
| विद्या चक्र         | गणित प्रकाश          | दुर्गलस्तिका की    | १९ सन् १८७४ ई०          |
| विद्या कुर          | धोच धानिका २ भा      | मज भूषा जाबिता     | तथा की के का पदे        |
| पदायोजन विटप        | सकील कायरा           | कौजदारी एक १५      | तरवी मज भूषा            |
| पदार्थ विद्या सार   | रेखा भागित २ भा      | सन् १८६० ई०        | सद नगर ८० (अ)           |
| भोज प्रबंध सार      | तथा २ भाग            | एक स्थापना १० स    | लि०) सन् १८७५ ई०        |
| राजनीति             | वीज गणित १ भाग       | १८७६ ई०            | सवाल जवाब गुलि          |
| तथा                 | तथा २ भाग            | एक रजिस्टर २०      | स                       |
| भाषा लघु व्याकरण    | रामायण दुर्गलस्तिका  | सन् १८६६ ई०        | अवध रुहेलखण्ड           |
| १ भाग तथा २ भा      | बाल काव्य            | एक स्थापना का      | खिंच का दस्तक           |
| भाषा तत्त्व दीपिका  | अयोध्या काव्य        | लगा २६ सन् १८७५ ई० | मज भूषा                 |
| भाषा चम्पू रूप      | आर्य काव्य           | मज भूषा एक १५      | कैथी                    |
| भूगोल तत्त्व        | किष्कि काव्य         | वध लगान १८ सन्     | पदार्थ विद्या के का पदे |
| भूगोल दर्पण         | सुन्दर काव्य         | १८६८ ई०            | उर्दू कैथी काव्य        |
| द्वितीय मतिमिरना    | लंका काव्य           | री २६ सन् १८६६ ई०  | देवत के लाइ कैथी        |
| शक १ भाग व २ भा     | उत्तर काव्य          | उर्दू              | का एक २ सन् १८७८        |
| व ३ भाग             | गुदका १ भाग          | एक स्थापना दस्ता   | ई० भंगव मगरवी व         |
| अवध देशीय भूगो      | तथा २ भाग ३ भाग      | वेजा १८ सन्        | शिक्षा पत्नी अवध दूति   |
| ल                   | पशु चिकित्सा         | १८५८ ई०            |                         |









August  
18





